खज़ाने के चालीस सन्दूक

लेखनः एरन शैपर्ड

चित्रः आलिशर डिआनोव

भाषन्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

शाही खज़ाना लूट लिया गया है। ईरान के सबसे हुनरमन्द पेशीनगोई करने वाले (भविष्य वक्ता) खज़ाने के चालीस सन्दूकों का सुराग नहीं बता पाते हैं।

"ढ़ोंगी!" सुल्तान कहता है और उन्हें कैदख़ाने में डलवा देता है।

हर ओर से मायूस हो सुल्तान अहमद को महल में बुलवाता है। उसने सुना है कि अहमद एक खोई हुई अंगूठी का पता बताने में कामयाब रहा था। नौजवान अहमद को खोए हुए खज़ाने को तलाशने के लिए चालीस दिनों की मोहलत मिलती है।

पर अहमद जानता है कि असली ढ़ोंगी तो वह खुद है। अंगूठी का सुराग बताना तो किस्मत की बात थी। वह पेशीनगोई के पासे फेंकने से कहीं ज़्यादा आसानी से कुदाल और फावड़ा चलाने का आदी है।

क्या अहमद चालीस दिन पूरे होने पर खुद को बचा सकेगा?

एरन शैपर्ड ने विनोद और उत्तेजना से भरी इस पारंपरिक ईरानी लोककथा को अपनी तरह से पेश किया है। आलिशर डिआनोव के चित्र किस्से में जान फूंकते हैं।

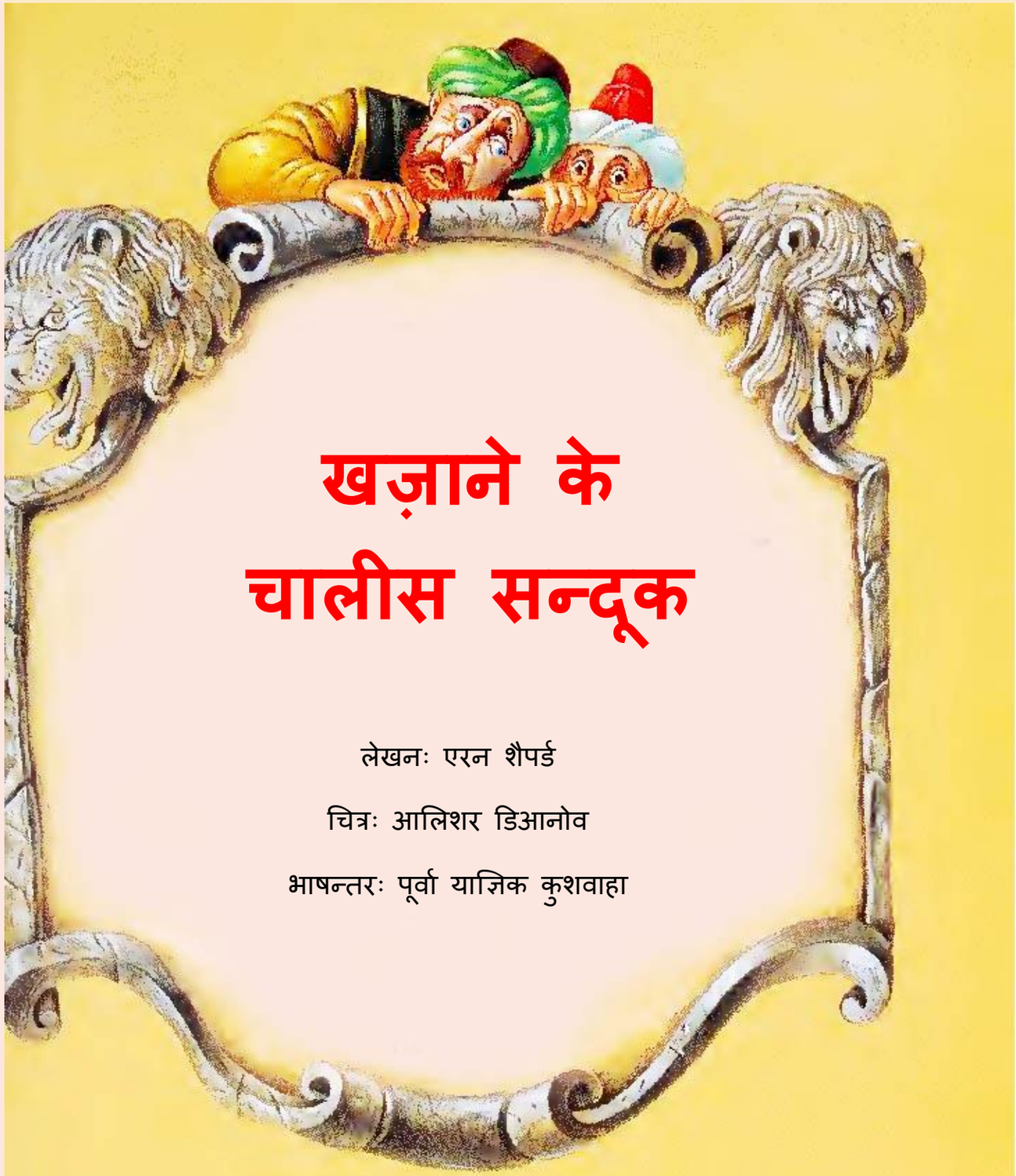

खज़ाने के चालीस सन्दूक

लेखनः एरन शैपर्ड

चित्रः आलिशर डिआनोव

भाषन्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

ईरान के लोगों के लिए

- ए.एस.

ओल्गा कोन्डाकोवा के लिए

- ए.डी.

ईरान के शाही शहर इसफ़हान में अहमद नाम का एक नौजवान रहता था, जिसकी बीवी का नाम जमेल था। वह किसी खास हुनर या पेशे में माहिर नहीं था। वह हमेशा अपनी बीवी से कहता था कि अगर तुम कुदाल और फावड़े से गड्ढा खोद सकते हो, तो तुम ज़िन्दा रहने के लिए काफ़ी कमा सकते हो।

पर जमेल के लिए इतना भर काफ़ी न था।

एक बार जमेल आवामी ग़ुसल (सार्वजनिक नहानघर) में गई, जैसे वह अक्सर जाती थी, ताकि गरम पानी से नहा सके और दूसरी औरतों से गपशप कर सके। पर दरवाज़े की चौकसी करने वाले ने उससे कहा, "तुम आज अन्दर नहीं जा सकतीं। सुल्तान के शाही पेशीनगो की बीवी ने पूरी जगह अपने लिए ले रखी है।"

"वह खुद को क्या समझती है?" जमेल बड़बड़ाई। "सिर्फ इसलिए कि उसका खाविन्द लोगों की तकदीर बताता है?" पर उसे घर लौटना ही पड़ा। पूरे रास्ते वह गुस्से से धुंआती रही।

उस शाम जब अहमद ने दिन भर की कमाई जमेल की हथेली पर धरी, वह भभक पड़ी, "इन चन्द सिक्कों को तो देखो! मैं और बर्दाश्त नहीं कर सकती। कल से तुम बाज़ार में बैठोगे और पेशीनगोई करोगे (लोगों की किस्मत पढ़ोगे)।"

"तुम पगला गई हो क्या?" अहमद ने कहा। "मैं लोगों की किस्मत बताने के बारे में भला क्या जानता हूँ?"

"कुछ जानने की दरकार है भी नहीं," जमेल बोली। "जब कोई तुमसे सवाल पूछे, तुम्हें बस पासे ही तो फेंकने हैं। और तब कुछ ऐसा बड़बड़ाना है जो अक्लमन्दी भरा लगे। या तो मेरी बात मान लो, नहीं तो मैं अपने बाप के घर चली।"

सो, अगले दिन लाचार अहमद ने अपनी कुदाल और फावड़े को बेचा और उस पैसे से पासे, तख़्ता और जैसा चोंगा पेशीनगोई करने वाले पहनते हैं, वैसा एक चोंगा ख़रीद लिया। इसके बाद वह बाज़ार में आवामी गुसलखाने के पास बैठ गया।

वह बैठा ही था कि सुल्तान के एक वज़ीर की बीवी उसके पास दौड़ी आई।

"पेशीनगो, तुम्हें मेरी मदद करनी होगी। मैं अपनी बेशकीमती अंगूठी पहन कर गुसल करने आई थी, पर अब वह ग़ायब है। बताओ वह कहाँ है?"

अहमद ने अपनी थूक निगली, तब पासों को फेंका। वह घबरा कर सोचने लगा कि वह कहे तो क्या कहे? अचानक उसकी नज़र उस महिला की आस्तीन पर पड़ी। उसे उसमें एक छोटा सा सुराख़ दिखा और उसके अन्दर से नज़र आती चमड़ी भी। अब यह तो किसी इज़्ज़तदार औरत के लिए ठीक न था। सो अहमद आगे को झुका और उसे चेताने को फुसफुसाया, "मोहतरमा, मुझे एक सुराख़ दिख रहा है।"

"एक क्या?" औरत ने भी सामने झुक कर पूछा।

"एक सुराख़! एक सुराख़!"

वह एक दम खुश हो गई। "बेशक! एक सुराख़!"

वह तेज़ी से गुसलखाने को लौटी और दीवार के उस सुराख़ को तलाशा जिसमें नहाने से पहले उसने हिफ़ाज़त के लिए अंगूठी रखी थी, पर तब भूल गई थी। अंगूठी ले वह अहमद के पास लौटी ।

"ख़ुदा का शुक्र है!" उसने कहा "तुमने बिलकुल सही बताया कि वह कहाँ थी।" तब उसने भौंचक अहमद को सोने का एक सिक्का थमाया।

उस शाम जब जमेल ने सिक्का देखा और किस्सा सुना, वह फौरन बोली, "देखा ना? मैं कहती न थी कि इसमें कुछ भी नहीं रखा है।"

"आज तो खुदा की मेहरबानी थी," अहमद बोला। "पर मैं दूसरी बार उसका इम्तहान नहीं लूंगा।"

"बकवास!" जमेल ने पलट कर कहा। "अगर तुम अपनी बीवी को साथ रखना चाहते हो, तो कल बाज़ार में लौटोगे।"

अब हुआ यह कि इत्तफ़ाक से उसी रात सुल्तान के महल में रखा शाही खज़ाना लूट लिया गया। चालीस जोड़ी हाथों ने चालीस सन्दूकों में भरा सोना और जवाहरात पार कर लिए थे।

अगली सुबह यह ख़बर सुल्तान को सुनाई गई। "मेरे शाही पेशीनगोई करने वालों और उनके सहायकों को बुलाओ," सुल्तान ने हुक्म दिया।

हालांकि सभी पेशीनगोई करने वालों ने अपने पासे फेंके और बड़ी अक्लमन्दी से बड़बड़ाए उनमें से एक भी चोरों या ख़ज़ाने का पता न बता सका।

"ढोंगी!" सुल्तान चीखा, और हुक्म दिया, "सबको कैदख़ाने में ठूंस दो।"

सुल्तान ने उस नौजवान पेशीनगोई करने वाले के बारे में सुन रखा था, जिसने वज़ीर की बीवी की अंगूठी का सुराग़ बताया था। सो उसने दो पहरेदारों को बाज़ार भेजा कि वे अहमद को लिवा लाएं। अहमद कांपता-थरथराता सुल्तान के सामने हाज़िर हुआ।

"पेशीनगो," सुल्तान ने कहा। "मेरे खज़ाने से चालीस सन्दूक चुरा लिए गए हैं। चोरों के बारे में तुम क्या बता सकते हो?" अहमद ने चालीस सन्दूकों को उठा ले जाने के बारे में सोचा। "जहाँपनाह! मैं इतना बता सकता हूँ कि चालीस चोर थे।"

"कमाल है!" सुल्तान ने कहा। "मेरे अपने पेशीनगोई करने वालों में एक भी यह तक नहीं बता पाया था। अच्छा तो अब उन चोरों और खज़ाने का पता भी बताओ।"

अहमद को घबराहट के मारे चक्कर आने लगे। "मैं...मैं पूरी कोशिश करूंगा हुज़ूर। पर कुछ वक़्त लगेगा।"

"कितना?" सुल्तान ने जानना चाहा।

"अ...अ...चालीस दिन हुज़ूर।" अहमद ने ज़्यादा से ज़्यादा समय मांगते हुए कहा। "हरेक चोर के लिए एक दिन।"

"यह तो बड़ा लम्बा समय है!" सुल्तान ने कहा। "पर ठीक है," इतना वक़्त तुम्हें देता हूँ। अगर तुम कामयाब हुए तो मैं तुम्हें मालामाल कर दूंगा। पर नाकाम रहे तो तुम भी बाकी पेशीनगोई करने वालों के साथ कैदखाने में सड़ोगे।"

घर लौट अहमद जमेल से बोला, "देखा तुमने कैसी मुसीबत खड़ी कर दी है? चालीस दिन की बात है कि सुल्तान मुझे कैदखाने में ठूंस देगा।"

"बकवास!" जमेल ने कहा। "उन सन्दूकों को खोज निकालो। आख़िर तुमने अंगूठी भी तो ढूंढ निकाली थी कि नहीं?"

"मैंने कुछ नहीं ढूंढा था जमेल। वह तो ऊपर वाले की मेहरबानी थी। पर इस बार कोई उम्मीद नहीं है।"

अहमद ने सूखे खजूर लिए और उनमें से चालीस गिन कर एक मर्तबान में डाल दिए। "मैं हर दिन एक खजूर खाऊंगा। इससे मुझे पता रहेगा कि मेरी आज़ाद ज़िन्दगी के बचे हुए चालीस दिन कब पूरे हो चुके हैं।"

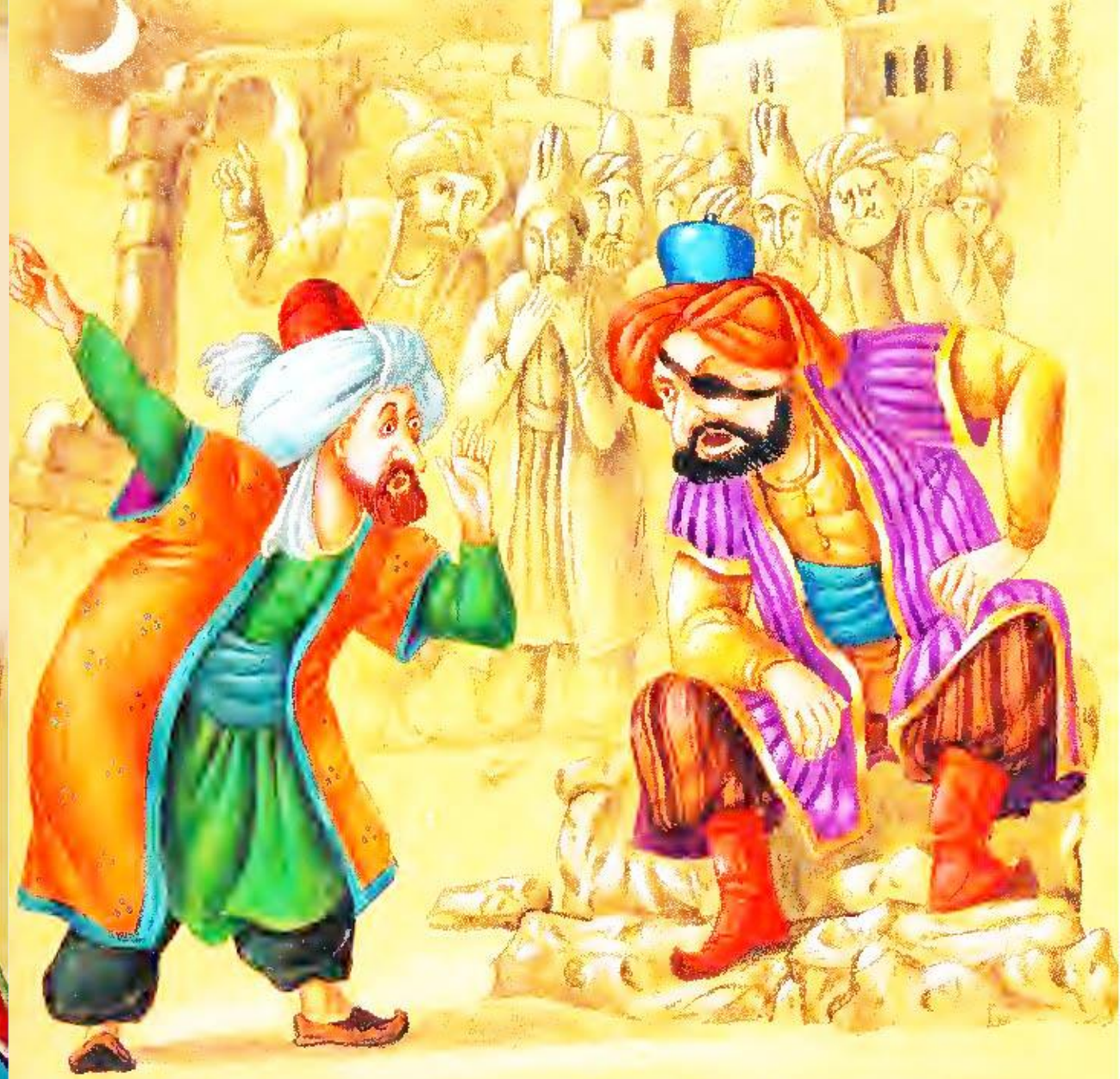

इधर बात यह थी सुल्तान के ख़िदमतगारों में एक उन चालीस चोरों में शामिल था। उसने सुल्तान और अहमद की पूरी बातचीत सुनी। वह उसी शाम चोरों के ठिकाने पर पहुँचा और चोरों के सरदार को सब बताया। "एक नया पेशीनगोई करने वाला है, जो कहता है कि वह चालीस दिनों में चोरों और खज़ाने को तलाश लेगा!"

"वह सबको बेवकूफ बना रहा है," सरदार ने कहा। "पर हम कोई जोखिम नहीं मोल ले सकते। ऐसा करो तुम भेस बदलो और उसके घर जाकर जो पता कर सको पता लगाओ।"

सो सुल्तान का ख़िदमतगार अहमद के घर की सपाट छत पर चढ़ा और नीचे घर के अन्दर हो रही बातें सुनने लगा। इत्तफ़ाक से अहमद ने उसी वक़्त मर्तबान से पहला खजूर निकाला, और जमेल से बोला, "यह पहला है।"

चोर की तो सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। वह इतना घबरा गया कि सीढ़ियों से नीचे गिरते-गिरते बचा। वह फटाफट चोरों के ठिकाने पहुँच, सरदार से बोला, "वह बड़ा पहुँचा हुआ है! उसकी ताकतें कमाल की हैं। मुझे देखे बिना ही उसे मालूम पड़ गया कि मैं छत पर हूँ। मैंने उसे साफ-साफ कहते सुना, "यह पहला है।"

"तुमने यों ही सोच लिया होगा," सरदार ने कहा। "कल तुम दो जने जाना।"

अगली रात सुल्तान का ख़िदमतगार अपने एक चोर साथी के साथ अहमद की छत पर लौटा। वे कान लगाए सुनने की कोशिश कर रहे थे। कुछ देर बाद अहमद ने दूसरा खजूर खाया और बोला, "यह दो हुए।"

दोनों चोरों की बात सुन चोरों का सरदार बोला "ऐसा हो ही नहीं सकता!"

सो अगली रात सरदार ने तीन चोरों को भेजा, तब चार, उसके बाद पाँच, फिर छह को।

यह सिलसिला तब तक चलता रहा जक तक चालीसवीं रात सरदार ने कहा, "इस बार मैं खुद भी चलता हूँ।"

अब चालीस के चालीस चोर अहमद की छत पर खड़े, कान लगा कर सुनने लगे। अहमद ने उदासी से आखिरी खजूर खाया और बोला, "यह चालीसवां है। गिनती पूरी हुई।"

जमेल अहमद के पास आकर बैठी। "अहमद," वह बुझे सुर में बोली। "यह मेरी गलती थी। मुझे तुमसे पेशीनगोई करने को नहीं कहना चाहिए था। तुम जो हो सो हो। तुम्हें कुछ दूसरा बनाने की कोशिश मुझे नहीं करनी चाहिए थी। क्या तुम मुझे मुआफ़ कर सकते हो?"

"मैं माफ़ करता हूँ जमेल। पर ग़लती मेरी भी थी। मुझे भी वह नहीं करना चाहिए था जो अक्लमन्दी की बात न हो। पर इस बहस से अब क्या फ़ायदा?"

ठीक उसी वक़्त दरवाज़े पर दस्तक सुनाई दी।

अहमद ने गहरी सांस भरते कहा, "सुल्तान के सिपाही अभी से पहुँच गए!" वह दरवाज़ा खोलते बोला, "ठीक है, ठीक है, मैं जानता हूँ कि तुम लोग क्यों आए हो।"

उसने दरवाज़ा खोला। अपने सामने चालीस पुरुषों को घुटने टेक ज़मीन पर झुकते देख वह भौंचक रह गया।

"बेशक आप सब कुछ जानते हैं, महान पेशीनगो!" चोरों के सरदार ने कहा। "आपसे कुछ छुपा नहीं है। पर हम पर रहम कीजिए। मेहरबानी से सुल्तान को हमारा सुराग मत बताइएगा।"

हालांकि अहमद चकराया हुआ था, वह समझ गया कि ये ही चालीस चोर हैं। उसने जल्दी से सोचा और बोला, "ठीक है, मैं तुम्हारा सुराग न खोलूंगा, पर तुम लोगों को खज़ाने की पाई-पाई लौटानी होगी।"

"फ़ौरन! फ़ौरन!" सरदार ने घिघिया कर कहा।

रात बीतने से पहले ही चालीस जोड़ी हाथों ने सोने-जवाहरातों से भरे सन्दूक सुल्तान के ख़ज़ाने में वापस धर दिए।

अगले दिन सुबह-सुबह अहमद सुल्तान के सामने हाज़िर हुआ।

"जहाँपनाह, मैं अपनी ताकत से या तो चोर खोज सकता हूँ, या फिर ख़ज़ाना। पर दोनों नहीं। आप किसे चुनना चाहेंगे?"

"मेरे ख़याल से ख़ज़ाना," सुल्तान ने कहा। "हालांकि चोरों को ना पाना बड़े अफ़सोस की बात है। उनके लिए खौलता तेल तैयार था। ख़ैर बताओ खज़ाना कहाँ है? मैं फ़ौरन अपने आदमी भेजता हूँ।।"

"उसकी दरकार नहीं, हुज़ूर," अहमद ने हवा में अपने हाथ लहराए और बोला, "अगड़म-बगड़म, तिगड़म-विगड़म, हल्लम-चल्लम!" तब उसने ऐलान किया, "मेरी जादूई ताकत से सारे सन्दूक अपनी जगह लौट चुके हैं।

सुल्तान खुद अहमद के साथ खज़ाने में गया और सारे सन्दूकों को अपनी जगह पर देखा। "तुम इस ज़माने के सबसे बड़े पेशीनगोई करने वाले हो!" सुल्तान ने खुश होकर कहा। "आज से तुम ही मेरे शाही पेशीनगोई करने वाले बनोगे।"

"शुक्रिया जहाँपनाह!" अहमद ने अदब से झुकते हुए कहा। "पर यह नामुमकिन है। आपका ख़ज़ाना ढूंढना इतना मुश्किल था कि मेरी सारी जादूई ताकत चुक गई है। अब मैं कभी पेशीनगोई कर ही नहीं सकता।

"अरे यह तो बहुत ही बुरा हुआ," सुल्तान ने उदास होकर कहा। "फिर तो मुझे तुम्हें दुगना इनाम देना होगा। तुम इन सन्दूकों में से दो ले जाओ।"

सो अहमद जमेल के पास सही-सलामत, दौलतमन्द और पहले से कहीं ज़्यादा अक्लमन्द बन लौटा। और जैसा कोई भी पेशीनगोई करने वाला बताता, "इसके बाद वे हमेशा के लिए एक खुशहाल ज़िन्दगी जीते रहे।"

इस किस्से के बारे में

भविष्यवक्ता बनने का नाटक करने वाले इन्सान का किस्सा ईरान और बाकी इस्लामी दुनिया की सबसे लोकप्रिय कहानियों में से एक है। आप चाहें तो ईरानी लोककथाओं के संकलनों को खंगाल कर उसके और कारनामों के बारे में पढ़ सकते हैं।

इसफ़हान - शाह अब्बास, महान, ने 1598 में शहर इसफ़हान को ईरान की राजधानी बना था और अगले सौ सालों तक यह राजधानी बना रहा। अब्बास के समय में यह दुनिया के सबसे खूबसूरत शहरों में गिना जाता था और कला और व्यापार का अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र था। इस समय को ईरानी संस्कृति का स्वर्ण युग भी कहा जाता है। (ईरान को पहले पर्शिया/फारस कहा जाता था।

पेशीनगोई करना/भविष्य बताना - जादू से गुप्त बातें जानने की चेष्टाएं इन्सान के पूरे इतिहास में, हरेक संस्कृति में होती रही हैं। अज्ञात को जानने का फारसी तरीका था पासों को फेंक कर बूझना। इन पासों को रहमल कहा जाता था। भविष्य पढ़ने वाले आठ पासे फेंकते थे और वे तख्ते पर जिस तरह गिरते थे उस आधार पर सवाल का जवाब देते थे।

पोशाक - मुस्लिम कानून स्त्रियों और पुरुषों को शालीन कपड़े पहनने को कहता है, जिससे लगभग पूरा शरीर ढ़का रहे। ईरानी महिलाओं का परंपरागत वस्त्र चादोर कहलाता है। यह काले कपड़े का बना होता है, जिसे स्त्रियाँ अपने कपड़ों के ऊपर लपेटती हैं।

सार्वजनिक गुसलखाने - आम लोगों के लिए बने गुसलखाने या हमाम ईरानी और मध्यपूर्व के परंपरागत सामाजिक जीवन हिस्सा रहे हैं। इन हमामों में एक बड़ा कुण्ड होता था, जिसमें गरम पानी होता था। जैसे अंग्रज़ों के बाद के 'हॉट बाथ' होते हैं। इनका इस्तमाल स्त्री-पुरुष दोनों करते थे पर उनके कमरे और समय अलग-अलग हुआ करते थे।

रिहायशी मकान - ईरान के रिहायशी घरों की छतें सपाट होती हैं। इनका उपयोग कई तरह से किया जाता है। गर्मियों में इन छतों पर सोया जाता है, ताकि कमरों की घुप्प गरमी से बचा जा सके। घर के अन्दर से बनी सीढ़ियाँ छत को जाती हैं, और ऊँची दीवारें निजता बनाए रखती हैं।

इस किस्से के अनेक स्वरूप देखने के बाद मैंने इस पुनर्कथन को मुख्यतः डी.एल.आर. व ई.ओ. लॉरिमर के पर्शियन टेल्स के संकलन के अनुवाद पर आधारित किया है। मैं 1995 में अपने ई-मेल कार्यक्रम 'वर्कस् इन प्रोग्रेस' में भाग लेने वाले छात्रों, शिक्षकों और लाइब्रेरियनों का आभारी हूँ। क़िताब के आरंभिक प्रारूपों पर उनकी टिप्पणियों ने मुझे इसे संशोधित करने में मदद की।